क्लास M.A. SEM-II शिक्षक-रवि शंकर राय

विषय-macro economics दिनांक 06-07-2020,समय-2:10 PM

विवेकपूर्ण प्रत्याशाएँ (Rational Expectations)

विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं का विचार सर्वप्रथम जॉन मूथ द्वारा 1961 में प्रस्तुत किया गया, जिसने यह विचार इंजीनियरी साहित्य से लिया था। उसका मॉडल मुख्य बाजार की मॉडलिंग कीमत गतिविधियों के बारे में है। यदि हम यह मानकर चलें कि आर्थिक एजेंट प्रत्याशाओं का निर्माण करते समय सूचनाओं (informations) का कुशल व इष्टतम उपयोग करते हैं तो वे प्रत्याशाओं के एक ऐसे सिद्धांत की रचना करते हैं जिससे उपभोक्ता तथा उत्पादक के प्रत्याशित कीमत परिवर्तनों पर आधारित प्रतिक्रिया उनके वास्तविक कीमत परिवर्तनों पर आधारित प्रतिक्रिया पर निर्भर करती है। मूथ का कहना है कि कुछ प्रत्याशाएँ इन अर्थों में विवेकपूर्ण हैं कि प्रत्याशाएँ तथा घटनाएँ एक अविचारित (random) त्रुटि के कारण ही भिन्न होती हैं।

मूथ की विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं की कल्पना व्यष्टि अर्थशास्त्र से संबंधित है। इससे बहुत से अर्थशास्त्री संतुष्ट नहीं थे। अतः यह दस वर्षों तक निष्क्रिय रही। 1970 के दशक के आरंभ में रॉबर्ट लूकस, थॉमस सारजेंट (Thomas Sargent) तथा नील वैलस (Neil Wallace) ने इस विचार का उपयोग समष्टि अर्थशास्त्र नीति की समस्याओं के लिए किया।

विवेकपूर्ण प्रत्याशाओं की परिकल्पना की मूल प्रस्थापनाएँ

(Basic Propositions of Rational Expectations Hypothesis)

रेटेक्स परिकल्पना मानती है कि आर्थिक एजेंट अपने पास उपलब्ध समस्त आर्थिक सूचना का उपयोग करके कीमतों, आय आदि जैसे आर्थिक चरों (variables) के भावी मूल्यों की प्रत्याशाओं का निर्माण करते हैं। यह सूचना विशेषकर सरकार की मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों जैसे आर्थिक चरों से जुड़े हुए संबंधों को अपने में सम्मिलित करती है। इस तरह प्रत्याशाएँ बनाने वाले यह मानते हैं कि आर्थिक एजेंटों को भविष्य की घटनाओं के बारे में पूरी और सही सूचना होती है। मूथ के अनुसार, सूचना को किसी अन्य दुर्लभ संसाधन की तरह समझना चाहिए। इसके अलावा विवेकपूर्ण आर्थिक एजेंटों को अपनी प्रत्याशाएँ बनाते समय आर्थिक प्रणाली के संबंध में अपने ज्ञान का प्रयोग करना चाहिए। अतः रेटेक्स की परिकल्पना यह मानती है कि व्यक्तिगत आर्थिक एजेंट प्रत्याशाओं का निर्माण करने में संपूर्ण उपलब्ध और सुसंगत सूचना का उपयोग

Ravi Shankar Ray

करते हैं और वे इस सूचना को अपने विवेक से तैयार करते हैं। यह मानना महत्त्वपूर्ण है कि रेटेक्स, उपभोक्ता अथवा फर्मों के पूर्णतः दूरदर्शी होने या उनकी प्रत्याशाएँ हमेशा ही होने को प्रकट नहीं करता है। यह संकेत करता है कि एजेंट पिछली त्रुटियों पर विचार करते हैं और यदि आवश्यक हो तो ऐसी त्रुटियों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए अपने प्रत्याशित व्यवहार का पुनरीक्षण करते हैं। वस्तुतः ऐसे अनुमान यह संकेत देते हैं कि एजेंट नियमित प्रत्याशित त्रुटियों को दूर करने में सफल होते हैं ताकि उपलब्ध सूचना से ऐसी त्रुटियाँ औसतन असंबद्ध हों।

रेटेक्स परिकल्पना आर्थिक (मौद्रिक, राजकोषीय और आय) नीतियों पर लागू की जाती है। विवेकपूर्ण प्रत्याशाएँ __ लगाने वालों ने स्थिरीकरण नीतियों की अल्पकालिक अप्रभावशीलता (Ineffectiveness) को दर्शाया है। उनके

अनुसार, आर्थिक (मौद्रिक, राजकोषीय और आय) नीतियों में परिवर्तन होने से अर्थव्यवस्था पर इसके पड़ने वाले प्रभावों की अधिक सूचना किसी को भी नहीं होती। विशेष रूप से, इसका अर्थ मंदी को नियंत्रित करने हेतु समष्टि आर्थिक नीतियों जैसे कर कटौती करना, सरकारी खर्च बढ़ाना, मुद्रा आपूर्ति बढ़ाना या घाटे का बजट बनाना आदि पर रोक लगाना है। उनका तर्क है कि जनता ने पिछले अनुभव से यह सीखा है कि सरकार ऐसी नीतियों का अनुसरण करेगी। इसलिए सरकार इनके प्रभावों को अपनाकर जनता को बेवकूफ नहीं बना सकती और ऐसी नीति का संकेत मात्र भी जनता की ओर से व्यापक प्रतिचक्रीय (countercyclical) प्रतिक्रिया की प्रत्याशाएँ उत्पन्न करता है। इस तरह रेटेक्स परिकल्पना के अनुसार, सरकार की मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों के बारे में लोग अनुमान लगाते हैं

और आर्थिक फैसले करते समय उनकी ओर ध्यान देते हैं। इसके परिणामस्वरूप, जब तक सरकारी नीतियों के संकेत मिलते हैं, जनता उन पर पहले से ही कार्य कर चुकी होती है और उनके प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। दूसरे शब्दों में, रेटेक्स परिकल्पना यह बताती है कि लोगों के आर्थिक व्यवहार में ही नीति-चालें परिवर्तन लाती हैं जिनकी उम्मीद

नहीं की जाती है और वे सरकार द्वारा अप्रत्याशित चालें होती हैं। जब एक बार लोगों को नीति के बारे में सूचना __ प्राप्त हो जाती है और उसके चालू होने की प्रत्याशा होती है तो यह लोगों के आर्थिक व्यवहार में परिवर्तन ला सकती hai .

Ravi Shankar Ray